

२. इतिहास लेखन : भारतीय परंपरा

२.१ भारतीय इतिहास लेखन की यात्रा ।

२.२ भारतीय इतिहास लेखन : विभिन्न सैद्धांतिक प्रणालियाँ ।

२.१ भारतीय इतिहास लेखन की यात्रा

हमने प्रथम पाठ में इतिहास लेखन की पश्चिमी परंपरा का परिचय प्राप्त किया है । इस पाठ में हम भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

प्राचीन काल का इतिहास लेखन : प्राचीन भारत में पूर्वजों के पराक्रम, देवी-देवताओं की परंपराएँ, सामाजिक परिवर्तन आदि की स्मृतियाँ केवल मौखिक परंपरा द्वारा संरक्षित की जाती थीं।

हड़प्पा संस्कृति में पाए गए प्राचीन लेखों के आधार पर दिखाई देता है कि भारत में ईसा पूर्व तीसरे सहस्रक से अथवा उसके पूर्व से लेखन कला अस्तित्व में थी । फिर भी हड़प्पा संस्कृति की लिपि को पढ़ने में अब भी सफलता नहीं मिली है ।

भारत में ऐतिहासिक स्वरूप का सब से प्राचीन लिखित साहित्य उकेरे हुए लेखों के रूप में पाया जाता है । इन लेखों का प्रारंभ मौर्य सम्राट अशोक की कालावधि से अर्थात् ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से होता है । सम्राट अशोक के उकेरे हुए लेख प्रस्तरों और पत्थर के स्तंभों पर उकेरे गए हैं ।

ई.स. की पहली शताब्दी से धातु के सिक्के, मूर्तियाँ और शिल्प, ताम्रपट आदि पर उकेरे गए लेख प्राप्त होने लगते हैं । उनके द्वारा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है । सभी प्रकार के इन उकेरे हुए लेखों के कारण संबंधित राजा की कालावधि, वंशावली, राज्य विस्तार, तत्कालीन गतिविधियाँ, तत्कालीन सामाजिक ढाँचा, जलवायु,

इसे समझ लें



सोहगौड़ा ताम्रपट : यह ताम्रपट सोहगौड़ा (जिला-गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) में पाया गया । माना जाता है कि यह ताम्रपट मौर्य कालखंड का होना चाहिए । ताम्रपट पर उकेरे गए लेख ब्राह्मी लिपि में हैं । लेख के प्रारंभ में जो चिह्न हैं; उनमें चबुतरायुक्त पेड़ तथा पर्वत (एक पर दूसरी; इस प्रकार तीन कमानें) ये चिह्न प्राचीन आहत सिक्कों पर भी पाए जाते हैं । चार खंभों पर खड़े दुमंजिला मकानों की भाँति दिखाई देने वाले चिह्न भंडारघरों के निदेशक होंगे; ऐसा अध्ययनकर्ताओं का मत है । इन भंडारघरों के अनाज का उपयोग सावधानीपूर्वक करें; इस प्रकार का आदेश इस लेख में अंकित है । ऐसा माना जाता है कि अकाल सदृश्य स्थिति का निवारण करने के लिए कौन-सी सावधानी बरतनी चाहिए; इस संदर्भ में यह आदेश दिया गया होगा ।

अकाल जैसे महत्वपूर्ण घटकों की जानकारी प्राप्त होती है ।

प्राचीन भारतीय साहित्य में रामायण, महाभारत, महाकाव्यों, पुराणों, जैन और बौद्ध ग्रंथों तथा धर्मग्रंथों के अतिरिक्त भारतीय ग्रंथकारों द्वारा लिखित ऐतिहासिक स्वरूप का साहित्य, विदेशी

यात्रियों द्वारा लिखित यात्रावर्णन इतिहास लेखन के महत्वपूर्ण साधन माने जाते हैं ।

भारतीय इतिहास लेखन की यात्रा में प्राचीन कालखंड के राजाओं के चरित्र तथा राजवंशों का इतिहास बताने वाला लेखन महत्वपूर्ण चरण है । ई.स.की सातवीं शताब्दी में बाणभट्ट कवि द्वारा लिखित 'हर्षचरित' नामक संस्कृत काव्य का स्वरूप ऐतिहासिक चरित्रग्रंथ जैसा है । उसमें तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का यथार्थ चित्रण पाया जाता है ।

मध्ययुगीन इतिहास लेखन : ई.स. की बारहवीं शताब्दी में कल्हण द्वारा लिखित 'राजतरंगिणी' कश्मीर के इतिहास पर आधारित ग्रंथ है । इतिहास का लेखन किस प्रकार वैज्ञानिक पद्धति से किया जा सकता है; इस आधुनिक अवधारणा से यह ग्रंथ मेल रखता है । इसमें अनेक उकेरे हुए लेखों, सिक्कों, प्राचीन वास्तुओं के अवशेषों, राजवंशों के अधिकृत विवरण-अंकन और स्थानीय परंपराओं जैसे साधनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके मैंने इस ग्रंथ की रचना की; ऐसा उल्लेख कल्हण ने इस ग्रंथ में किया है ।

मध्ययुगीन भारत में मुस्लिम शासनकर्ताओं के दरबार में इतिहासकार थे । उनके इतिहास लेखन पर अरबी और फारसी इतिहास लेखन की परंपरा का प्रभाव दिखाई देता है । मध्ययुगीन मुस्लिम इतिहासकारों में जियाउद्दीन बरनी महत्वपूर्ण इतिहासकार माना जाता है । उसके द्वारा लिखित 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में उसने इतिहास लेखन का उद्देश्य स्पष्ट किया है । उसके मतानुसार इतिहासकार का कर्तव्य केवल शासकों के पराक्रम का और उनकी कल्याणकारी नीतियों का वर्णन करके पूर्ण नहीं होता है अपितु उनके दोषों और त्रुटिपूर्ण नीतियों का विश्लेषण भी इतिहासकार को करना चाहिए । यही नहीं बल्कि संबंधित कालखंड के विद्वान व्यक्तियों, अध्ययनकर्ताओं, साहित्यकारों और संतों का सांस्कृतिक जीवन पर पड़े प्रभाव को भी ध्यान



क्या, आप जानते हैं ?

अल् बैरूनी ने भारत में रहकर स्वयं के अनुभव अरबी भाषा में लिखे हैं । उसने तत्कालीन भारत में प्रचलित विद्याओं और समाज जीवन का चित्रण किया है । आगामी समय में हसन निजामी द्वारा लिखित 'ताजुल-ए-अमीर', मिनहाजुस सिराज इतिहासकार द्वारा लिखित 'तखाकत-ए-नसीरा', अमीर खुसरो का व्यापक लेखन, अमीर तिमुरी का आत्मनिवेदन 'तुजुक-ए-तिमुरी', याह्या बिन अहमद सरहिंदी इतिहासकार द्वारा लिखित 'तारीख-ए-मुबारकशाही' ग्रंथ महत्वपूर्ण माने जाते हैं । इन ग्रंथों द्वारा सुलतानशाही के कालखंड की जानकारी प्राप्त होती है । इब्न बतूता, अब्दुल रजाक, मार्को पोलो, निकोलो काँटी, बारबोसा और डोमिंगोस पेस जैसे यात्रियों के लेखन द्वारा सुलतानशाही के कालखंड का भारत समझ में आता है । औरंगजेब के कालखंड में ईश्वरलाल नागर, भीमसेन सक्सेना, खाफी खान और निकोलाय मनुची जैसे महत्वपूर्ण इतिहासकार थे ।

में रखना चाहिए । बरनी की इस विचारधारा के कारण इतिहास लेखन की व्याप्ति को अधिक विस्तार प्राप्त हुआ ।

मुगल शासकों के दरबार में इतिहासकारों के लेखन में शासकों की स्तुति करने और उनके प्रति निष्ठा व्यक्त करने को विशेष महत्व प्राप्त हुआ । इसके अतिरिक्त उनके द्वारा किए जाने वाले वर्णनों में सटीक काव्य छंद और सुंदर चित्रों का अंतर्भाव करने की प्रथा प्रारंभ हुई । मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर का आत्मचरित्र 'तुजुक-ए-बाबरी' में उसे जो युद्ध लड़ने पड़े; उनका वर्णन मिलता है । साथ ही; उसने जिन प्रदेशों की यात्राएँ की; उन प्रदेशों और शहरों का वर्णन, वहाँ की स्थानीय अर्थव्यवस्था और प्रथाएँ, वनस्पतियाँ आदि के सूक्ष्म निरीक्षणों का इसमें समावेश है ।

इतिहास लेखन की विश्लेषणात्मक पद्धति की दृष्टि से अबुल फजल द्वारा लिखित 'अकबरनामा' ग्रंथ का विशेष महत्त्व है। अधिकृत रूप में जिस जानकारी का लेखन किया गया था; उसके आधार पर ऐतिहासिक दस्तावेजों और कागजातों का सावधानीपूर्वक किया गया संकलन और उस जानकारी की विश्वसनीयता की कसकर और कड़ाई से की गई छानबीन अबुल फजल द्वारा अवलंबित अनुसंधान पद्धति थी। माना जाता है कि यह अनुसंधान पद्धति पूर्वाग्रह रहित और यथार्थवादी थी।

ऐतिहासिक साहित्य में 'बखर' एक महत्त्वपूर्ण प्रकार है। हमें बखर में वीरों के शौर्यगानों का बखान, ऐतिहासिक गतिविधियों, युद्धों, महापुरुषों के चरित्र के विषय में किया गया लेखन पढ़ने को मिलता है।

मराठी भाषा में विभिन्न प्रकार की 'बखरें' उपलब्ध हैं। उनमें 'सभासद की बखर' को महत्त्वपूर्ण बखर माना जाता है। छत्रपति राजाराम महाराज के कार्यकाल में कृष्णाजी अनंत सभासद ने यह बखर लिखी। इस बखर द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज के शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है।

'भाऊसाहेबांची बखर' (भाऊसाहेब की बखर) में पानीपत के युद्ध का वर्णन मिलता है। इसी विषय पर आधारित 'पानीपतची बखर' (पानीपत की बखर) नामक स्वतंत्र बखर भी लिखी गई है। 'होळकरांची कैफियत' (होलकरों का विवरण) बखर द्वारा हमें होलकरों का घराना और उनके द्वारा दिए गए योगदान का बोध होता है।

बखरों के चरित्रात्मक, वंशानुचरित्रात्मक, प्रसंग वर्णनात्मक, पंथीय, आत्मचरित्रपर, कैफियत, पौराणिक और राजनीतिपर जैसे प्रकार पाए जाते हैं।

आधुनिक कालखंड का इतिहास लेखन और अंग्रेजों का इतिहास कालखंड : बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजों के शासनकाल में भारतीय पुरातत्त्व अध्ययन को प्रारंभ हुआ। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंगहैम थे।



अलेक्जेंडर कनिंगहैम



जॉन मार्शल

उनके निरीक्षण में अनेक प्राचीन स्थानों का उत्खनन किया गया। इसके लिए उन्होंने प्रमुखतः बौद्ध ग्रंथों में उल्लिखित स्थानों पर ध्यान केंद्रित किया। आगे चलकर जॉन मार्शल के कार्यकाल में हड़प्पा संस्कृति की खोज हुई और यह सिद्ध हुआ कि भारतीय संस्कृति का इतिहास ईसा पूर्व तीसरे सहस्र तक अथवा उसके पूर्व तक भी पहुँच सकता है।

भारत में आए हुए अनेक अंग्रेज अधिकारियों ने भारतीय इतिहास के संबंध में लेखन किया है। उनके द्वारा किए गए लेखन पर अंग्रेजों की उपनिवेशवादी नीतियों का प्रभाव दिखाई देता है।

जेम्स मिल द्वारा लिखित 'द हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया' ग्रंथ के तीन खंड १८१७ ई. में प्रकाशित हुए। अंग्रेज इतिहासकार द्वारा भारतीय इतिहास पर लिखा गया यह प्रथम ग्रंथ है। उसके लेखन में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण का अभाव और भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं के प्रति पूर्वाग्रहदूषित दृष्टिकोण दिखाई देता है।



जेम्स मिल

१८४१ ई. में माउंट स्टुअर्ट एल्फिन्स्टन ने 'द हिस्ट्री ऑफ इंडिया' ग्रंथ लिखा। माउंट स्टुअर्ट एल्फिन्स्टन मुंबई के गवर्नर (१८१९-१८२७ ई.) थे।

भारत के इतिहास में मराठी साम्राज्य के कालखंड को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। मराठी साम्राज्य का इतिहास लिखने वाले अंग्रेज अधिकारियों में जेम्स

ग्रांट डफ का नाम महत्त्वपूर्ण है। उसने 'द हिस्ट्री ऑफ मराठाज' ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ के तीन खंड हैं। भारतीय संस्कृति और इतिहास को हीन मानने की प्रवृत्ति अंग्रेज अधिकारियों में पाई जाती है। यही प्रवृत्ति ग्रांट डफ के लेखन में भी स्पष्ट रूप में दिखाई देती है। ऐसी ही प्रवृत्ति राजस्थान का इतिहास लिखते समय कर्नल टॉड जैसे अधिकारी के लेखन में पाई जाती है। विलियम विल्सन हंटर ने भारत का द्विखंडात्मक इतिहास लिखा। उसमें हंटर की निष्पक्षता की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

डफ के इतिहास लेखन में पाए गए दोषों को उन्नीसवीं शताब्दी में नीलकंठ जनार्दन कीर्तने और वि.का.राजवाडे ने उद्घाटित किया।

२.२ भारतीय इतिहास लेखन : विविध सैद्धांतिक प्रणालियाँ

उपनिवेशवादी इतिहास लेखन : भारतीय इतिहास का अध्ययन और लेखन करनेवाले प्रारंभिक इतिहासकारों में प्रमुख रूप से अंग्रेज अधिकारी तथा ईसाई धर्मप्रचारकों का अंतर्भाव था। भारतीय संस्कृति गौण अथवा दोयम श्रेणी की है; इस प्रकार के पूर्वाग्रहदोष का प्रतिबिंब उनमें से कुछ इतिहासकारों के लेखन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनके इतिहास लेखन का उपयोग उपनिवेशवादी अंग्रेजी सत्ता के समर्थन हेतु किया गया। १९२२ ते १९३७ ई. के बीच प्रकाशित हुए 'केंब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया' ग्रंथ के पाँच खंड उपनिवेशवादी इतिहास लेखन के जीवित उदाहरण हैं।

प्राच्यवादी इतिहास लेखन : यूरोप के अध्येताओं में पूर्व की संस्कृति और देशों के प्रति कुतूहल उत्पन्न हुआ था। उन अध्येताओं में कुछ अध्येता ऐसे थे जिनमें पूर्व के देशों और उनकी संस्कृति के प्रति आदर और प्रशंसा का भाव था। उन्हें प्राच्यवादी कहा जाता है।

प्राच्यवादी अध्येताओं ने संस्कृत और यूरोपीय भाषाओं की समानधर्मिता का अध्ययन किया। प्राच्यवादी विद्वानों का बल वैदिक वाङ्मय और

संस्कृत साहित्य का अध्ययन करने पर था। इसके द्वारा यह विचार सामने आया कि इन भाषाओं की जननी एक प्राचीन इंडो-यूरोपीय भाषा थी।



विलियम जोन्स

१७८४ ई. में सर विलियम जोन्स ने कोलकाता में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की। इसके माध्यम से प्राचीन भारतीय वाङ्मय और इतिहास के अध्ययन को प्रेरणा प्राप्त हुई।

प्राच्यवादी अध्येताओं में जर्मन अध्येता फ्रेडरिक

मैक्समूलर का प्रमुख रूप से उल्लेख करना चाहिए। उसकी दृष्टि से संस्कृत भाषा इंडो-यूरोपीय भाषासमूह में अतिप्राचीन भाषा शाखा थी। मैक्समूलर को संस्कृत साहित्य में



फ्रेडरिक मैक्समूलर

विशेष रुचि थी। उसने संस्कृत ग्रंथ 'हितोपदेश' का जर्मन भाषा में अनुवाद किया। साथ ही; उसने 'द सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट' नाम से ५० खंडों का संपादन किया। उसने ऋग्वेद का संकलन करने का कार्य किया। वे छह खंडों में प्रकाशित हुए हैं। उसने ऋग्वेद ग्रंथ का जर्मन भाषा में अनुवाद किया।

राष्ट्रवादी इतिहास लेखन : उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी शिक्षाप्रणाली में शिक्षित भारतीय इतिहासकारों के लेखन में भारत के प्राचीन वैभव के प्रति गौरव का भाव और भारतीयों के आत्मसम्मान को जागृत करने की ओर उनका झुकाव दिखाई देता है। उनके लेखन को राष्ट्रवादी इतिहास लेखन कहा जाता है। महाराष्ट्र में किए गए राष्ट्रवादी इतिहास लेखन को विष्णुशास्त्री चिपलूणकर से प्रेरणा प्राप्त हुई। उन्होंने भारत के प्रति पूर्वाग्रहदूषित होकर अंग्रेज अधिकारियों द्वारा लिखे गए इतिहास का विरोध

किया । इस प्रकार राष्ट्रवादी इतिहास लेखन करने वाले इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास का स्वर्णिम युग खोजने का प्रयास किया । ऐसा करते समय कभी-कभी ऐतिहासिक तथ्यों और यथार्थ की विश्लेषणात्मक छानबीन करने की ओर उपेक्षा की गई; ऐसा आक्षेप भी राष्ट्रवादी इतिहास लेखन करने वालों पर किया गया । महादेव गोविंद रानडे, रामकृष्ण गोपाल भांडारकर, विनायक दामोदर सावरकर, राजेंद्रलाल मिश्र, रमेशचंद्र मजुमदार, काशीप्रसाद जैस्वाल, राधाकुमुद मुखर्जी, भगवानलाल इंद्र जी, वासुदेव विष्णु मिराशी, अनंत सदाशिव आलतेकर ये कुछ राष्ट्रवादी इतिहासकारों के नाम हैं ।



क्या, आप जानते हैं ?

‘द राइज ऑफ द मराठा पॉवर’ ग्रंथ में न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानडे ने मराठा सत्ता के उदित होने की पृष्ठभूमि को विस्तार में स्पष्ट किया है । इसे प्रतिपादित करते हुए वे कहते हैं – ‘मराठी सत्ता का उदय मात्र अचानक धधक उठा दावानल नहीं था अपितु उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में चल रही तैयारियाँ थीं जो बहुत समय से महाराष्ट्र में चल रही थीं ।’



वि. का. राजवाडे

वि.का.राजवाडे इतिहास लेखन, भाषाविज्ञान, व्युत्पत्ति, व्याकरण जैसे कई विषयों पर मौलिक अनुसंधान कार्य करने वाले और मराठी भाषा में लेखन करने वाले इतिहासकार के रूप में परिचित हैं । हमें अपना इतिहास लिखना चाहिए; इस बात का उन्होंने समर्थन किया । उन्होंने ‘मराठ्यांच्या इतिहासाची साधने’ (मराठों के इतिहास के साधन) शीर्षक से २२ खंडों का संपादन किया । उन खंडों के लिए लिखी हुई उनकी प्रस्तावनाएँ बहुत ही अध्ययनपूर्ण हैं । उनके मतानुसार ‘इतिहास से तात्पर्य भूतकालीन समाज का सर्वांगीण और समग्र जीवनदर्शन

है । केवल राजनीतिक गतिविधियाँ, सत्ता उलट देने के लिए किए गए षड्यंत्र और युद्धों की वास्तविकताएँ इतिहास नहीं हैं ।’ वास्तविक और मूल कागजातों-पत्रों और दस्तावेजों के ही आधार पर इतिहास लिखा जाना चाहिए; इसके प्रति वे आग्रही थे ।



क्या, आप जानते हैं ?

इतिहास विषय के अनुसंधान और शोधकार्य के लिए वि.का.राजवाडे ने पुणे में ७ जुलाई १९१० को ‘भारत इतिहास संशोधक मंडळ’ की स्थापना की ।

“मानवी इतिहास काल एवं स्थान से बद्ध रहता है । किसी भी प्रसंग का वर्णन अथवा विवेचन करना हो तो उस प्रसंग का अंतिम चित्रण विशिष्ट कालखंड और विशिष्ट स्थान के साथ जोड़कर दर्शाना चाहिए ।

काल, स्थान और व्यक्ति इन तीनों के बीच के समन्वय को प्रसंग अथवा ऐतिहासिक घटना का नाम दिया जा सकता है ।”

– वि.का.राजवाडे



स्वातंत्र्यवीर सावरकर

राष्ट्रवादी इतिहास लेखन का उपयोग भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध किए गए स्वतंत्रता युद्ध को प्रेरणा देने हेतु किया गया । उसमें स्वातंत्र्यवीर वि.दा.सावरकर द्वारा लिखित ‘द इंडियन वॉर ऑफ इन्डिपेन्डन्स 1857’ (१८५७ का ‘स्वतंत्रता समर’) पुस्तक का विशेष महत्त्व है ।

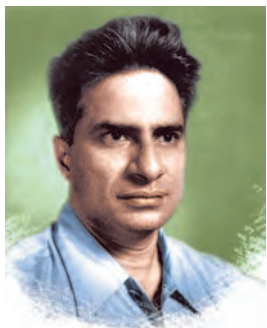
राष्ट्रवादी इतिहास लेखन के प्रभाव के फलस्वरूप प्रादेशिक इतिहास लिखने हेतु प्रोत्साहन प्राप्त हुआ । दक्षिण भारत की भौगोलिक विशेषताओं और इतिहास की ओर इतिहासकारों का ध्यान खींचा गया ।

स्वातंत्र्योत्तर कालखंड का इतिहास लेखन :

एक ओर राजवंशों के इतिहास को महत्त्व देनेवाला इतिहास लेखन किया जा रहा था; उसी समय सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक इतिहास लिखना प्रारंभ हुआ था। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में समाज, विज्ञान, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक प्रणाली, धार्मिक विचारधाराएँ, सांस्कृतिक पहलू जैसे विषयों के इतिहास का अध्ययन करने की आवश्यकता विचारकों को अनुभव होने लगी। इस कालखंड में इतिहास लेखन में मुख्यतः तीन नवीन वैचारिक धाराएँ दिखाई देती हैं। (१) मार्क्सवादी इतिहास (२) उपेक्षितों का (सब ऑल्टर्न) इतिहास (३) स्त्रीवादी इतिहास।

मार्क्सवादी इतिहास : मार्क्सवादी इतिहासकारों के लेखन में आर्थिक व्यवस्था में उत्पादन के साधनों, पद्धतियों और उत्पादन प्रक्रिया में मानवी संबंधों का विचार केंद्र में था। प्रत्येक सामाजिक घटना का सामान्य लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है; इसका विश्लेषण करना मार्क्सवादी इतिहास लेखन का महत्त्वपूर्ण सूत्र था।

मार्क्सवादी इतिहासकारों ने जातिव्यवस्था में होते गए परिवर्तनों का



दामोदर कोसंबी

अध्ययन किया। भारत में मार्क्सवादी इतिहास लेखन पद्धति का अवलंबन प्रभावशाली ढंग से करने वाले इतिहासकारों में दामोदर धर्मानंद कोसंबी, कामरेड श्रीपाद अमृत डांगे, रामशरण शर्मा, कामरेड शरद पाटिल आदि का योगदान महत्त्वपूर्ण है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से डांगे एक थे। उनकी लिखी 'प्रिमिटिव कम्युनिजम टू स्लेवरी' पुस्तक मार्क्सवादी इतिहास लेखन का उत्तम उदाहरण है।

उपेक्षितों का (सबऑल्टर्न) इतिहास : उपेक्षितों के समूहों का इतिहास लिखने का प्रारंभ मार्क्सवादी

इतिहास लेखन की परंपरा से हुआ। इतिहास लेखन का प्रारंभ समाज के निचले, सामान्य लोगों के स्तर से करना होगा, इस संकल्पना को प्रस्तुत करने में एंटोनिया ग्रामची नामक इटालियन विचारक का स्थान महत्त्वपूर्ण है।

उपेक्षितों का इतिहास लिखने के लिए लोकपरंपरा को महत्त्वपूर्ण साधन माना गया है। उपेक्षितों के इतिहास को एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा के रूप में स्थान प्राप्त करा देने का कार्य भारतीय इतिहासकार रणजीत गुहा ने किया परंतु उसके पूर्व भारत में उपेक्षितों के इतिहास का विचार महात्मा जोतीराव फुले और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के लेखन द्वारा सामने आता है।

महात्मा फुले ने 'गुलामगिरी' पुस्तक में अतिशूद्रों का इतिहास नए सिरे से खोलकर दिखाया। धर्म के नाम पर नारी, शूद्रों तथा अतिशूद्रों के होने वाले शोषण की ओर ध्यान खींचा।



महात्मा जोतीराव फुले

भारत के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक निर्माण में दलित वर्ग का बहुत बड़ा योगदान है। भारत के उपनिवेशवादी तथा राष्ट्रवादी इतिहास लेखन में इसकी उपेक्षा की गई। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने इस तथ्य को केंद्र में रखकर निरंतर लेखन किया। उनके द्वारा किए गए विपुल लेखन में 'हू वेअर द शूद्राज' और 'द अनटचेबल्स' ग्रंथ उपेक्षितों के इतिहास के उदाहरण के रूप में बताए जा सकते हैं।



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

स्त्रीवादी इतिहास : भारतीय इतिहास लेखन के क्षेत्र में प्रारंभ में मुख्यतः पुरुष अध्येता कार्यरत थे।

परिणामस्वरूप भारतीय इतिहास में प्राप्त स्त्रियों का स्थान तथा उनके द्वारा किए गए कार्य अन्य बातों की तुलना में दुर्लक्षित रह गए। उसे प्रकाश में लाना स्त्रीवादी इतिहासकारों के सम्मुख पहली चुनौती थी। साथ ही; स्त्रियों द्वारा लिखे गए साहित्य का अनुसंधान अथवा शोधकार्य और संकलन करना भी आवश्यक था। इतिहास में स्त्रियों ने जो अपना स्थान बनाया था; उसका नए सिरे से विचार होना आवश्यक था।

उन्नीसवीं शताब्दी में स्त्रियों के विषय में लेखन करने वाली लेखिकाओं में ताराबाई शिंदे का नाम अग्रणी है। उन्होंने



ताराबाई शिंदे

पुरुषप्रधान व्यवस्था और जातिव्यवस्था को विरोध दर्शाने वाला लेखन किया। १८८२ ई. में प्रकाशित उनकी 'स्त्रीपुरुष तुलना' पुस्तक को भारत का प्रथम स्त्रीवादी लेखन माना जाता है। १८८८ ई. में पंडिता रमाबाई द्वारा लिखित 'द हाई कास्ट हिंदू वुमन' पुस्तक प्रकाशित हुई।

स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में जो लेखन हुआ; वह स्त्रियों के साथ घर और काम के स्थान पर होने वाले व्यवहार, उनका राजनीतिक समानता का अधिकार जैसे विषयों पर केंद्रित हुआ था। संप्रति समय में ख्यातिप्राप्त लेखन में मीरा कोसंबी की 'क्रॉसिंग थ्रेशोल्ड्स : फेमिनिस्ट एसेज' पुस्तक का उल्लेख किया जा सकता है। इस पुस्तक में महाराष्ट्र की पंडिता रमाबाई, भारत में डॉक्टरी कार्य करने वाली पहली स्त्री डॉक्टर डॉ. रमाबाई जैसी स्त्रियों

के जीवन पर आधारित निबंध हैं। महाराष्ट्र में दलित स्त्रियों के दृष्टिकोण से सामाजिक वर्ग, जाति आदि बातों के संदर्भ में लेखन किया गया। इसमें शर्मिला रेगे का लेखनकार्य महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने 'राइटिंग कास्ट, राइटिंग जेंडर : रिडींग दलित वूमेन्स टेस्टीमोनीज' पुस्तक में दलित स्त्रियों के आत्मचरित्र पर लिखे निबंधों का संकलन है। किसी भी विशिष्ट विचारप्रणाली के प्रभाव में न आकर इतिहास लिखने वालों में सर यदुनाथ सरकार, सुरेंद्रनाथ सेन, रियासतकार गो.स.सरदेसाई, त्र्यंबक शंकर शेजवलकर के नामों का उल्लेख किया जाता है।



क्या, आप जानते हैं ?

गोविंद सखाराम सरदेसाई ने 'मराठी रियासत' को प्रकाशित करवाकर मराठी इतिहास लेखन के क्षेत्र में बहुत बड़ा कार्य किया है। उनका यह कार्य इतना लोकप्रिय हुआ कि समाज उन्हें 'रियासतकार' के रूप में जानने लगा। उन्होंने मराठों के समग्र इतिहास को अनेक खंडों में प्रकाशित किया है।

वर्तमान समय में य.दि.फडके, रामचंद्र गुहा आदि अनुसंधानकर्ताओं ने आधुनिक इतिहास लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

भारतीय इतिहास लेखन पर भारत में उदित हुए सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों का प्रभाव था। साथ ही; भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा स्वतंत्र और संपन्न रूप में विकसित होती हुई दिखाई देती है।



१. (अ) निम्न विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।

- (१) भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक थे ।
 (अ) अलेक्जेंडर कनिंगहैम
 (ब) विलियम जोन्स
 (क) जॉन मार्शल
 (ड) फ्रेडरिक मैक्समूलर
- (२) संस्कृत ग्रंथ 'हितोपदेश' का जर्मन भाषा में ने अनुवाद किया ।
 (अ) जेम्स मिल
 (ब) फ्रेडरिक मैक्समूलर
 (क) माउंट स्टुअर्ट एलफिन्स्टन
 (ड) जॉन मार्शल

(ब) निम्न में से असत्य जोड़ी को पहचानकर लिखिए ।

- (१) हू वेअर द शूद्राज - उपेक्षितों का इतिहास
 (२) स्त्रीपुरुष तुलना - स्त्रीवादी लेखन
 (३) द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस १८५७ - मार्क्सवादी इतिहास
 (४) ग्रांट डफ - उपनिवेशवादी इतिहास

२. निम्न कथनों को कारणसहित स्पष्ट कीजिए ।

- (१) प्रादेशिक इतिहास लेखन को प्रोत्साहन मिला ।
 (२) ऐतिहासिक साहित्य में 'बखर' महत्वपूर्ण प्रकार है ।

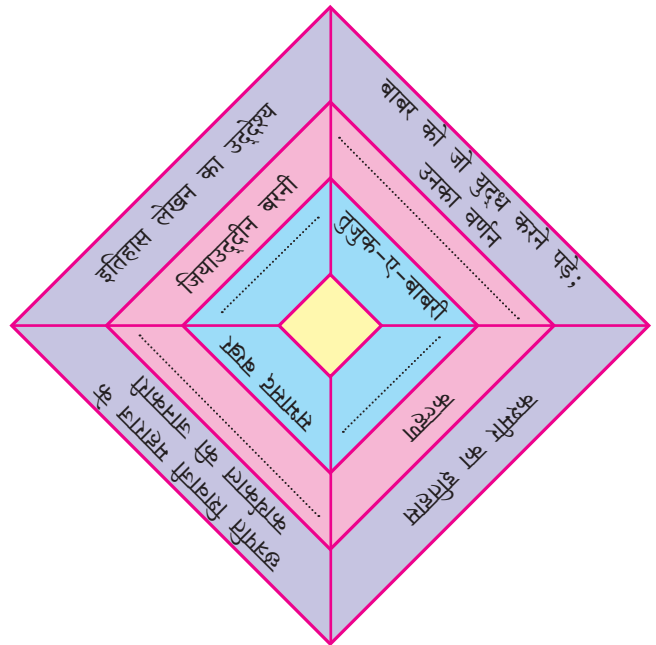
३. निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए ।

- (१) मार्क्सवादी लेखन किसे कहते हैं ?
 (२) इतिहास लेखन में इतिहासकार वि.का.राजवाडे के योगदान को स्पष्ट कीजिए ।

४. (अ) निम्न सारिणी पूर्ण कीजिए ।

जेम्स मिल	द हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया
जेम्स ग्रांट डफ	
.....	द हिस्ट्री ऑफ इंडिया
श्री.अ.डांगे	
.....	हू वेअर द शूद्राज

(ब) निम्न संकल्पनाचित्र को पूर्ण कीजिए ।



५. निम्न अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए ।

- (१) प्राच्यवादी इतिहास लेखन
 (२) राष्ट्रवादी इतिहास लेखन
 (३) उपेक्षितों का इतिहास

उपक्रम

पाठ में उल्लिखित विभिन्न इतिहासकारों की जानकारी देनेवाला सचित्र हस्तलिखित अंतरजाल की सहायता से तैयार कीजिए ।



361876

